RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-011/2021-23

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 54 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 4 अप्रैल, 2021

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 54, 1-4 अप्रैल 2021 तदनुसार 22 चैत्र, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

वेदकर्त्ता

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे।।

-सा० उ० ६।७२।१ (१०२५)

शब्दार्थ-विप्राय = मेधावी **बृहते** = महान् **ब्रह्मकृते** = वेदकर्त्ता **विपश्चिते** = सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी **पनस्यवे** = सबसे स्तोतव्य, व्यवहारोपदेष्टा **इन्द्राय** = अज्ञानवारक, उपद्रवशामक भगवान् के लिए **बृहत्** = महान् **साम** = साम, स्तुति **गायत** = गाओ।

व्याख्या-सचमुच सभी स्तुतियों का पात्र भगवान् है। **गुणकथनं स्तुतिः**। कौन-सा ऐसा गुण है जो भगवान् में नहीं है! वह सर्वगुणनिधान है। उसके गुणों का कथन ही वास्तविक स्तुति है।

भगवान् को यहाँ 'ब्रह्मकृत्' = वेदकर्त्ता कहा गया है। तनिक वेद के शब्दों पर ध्यान दीजिए। भगवान् को पहले इन्द्र=अन्धकारवारक कहा गया है। अन्धकार तो सूर्य आदि भौतिक पदार्थ भी दूर करते हैं, इसलिए भगवान् के सम्बन्ध में कहा कि वह 'विप्र' है, बुद्धिमान् भी है, ऐसा बुद्धिमान् जिसमें धारणावती बुद्धि भी है, अर्थात् वह जड़ नहीं चेतन है। संसार में सैकड़ों विप्र हैं, किन्तु भगवान् बृहत्=महान् है और साथ ही **'ब्रह्मकृत्'** वेदकर्त्ता है। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य को कार्य चलाने के लिए, विश्व तथा विश्वपति का ज्ञान कराने के लिए भगवान् ने जो ज्ञान दिया, वह सब विद्याओं का मूल है। सभी ऋषि-मुनि कहते हैं-**वेदेषु सर्वा विद्याः सन्ति मूलोद्देश्यतः**-बीजरूप से वेद में सभी विद्याएँ हैं। ऋग्वेद में एक स्थान पर वेद को परमात्मा की रचना बताया है-**देवत्तं ब्रह्म गायत** (ऋ० १।३७।४)-परमात्मा के दिये वेद का गान करो। स्पष्टरूप से ब्रह्म=वेद के साथ 'देवत्तं' [देव का दिया हुआ] विशेषण विद्यमान है। वेद-ज्ञान देने का प्रयोजन बताने के लिए मन्त्र में एक और विशेषण लगाया कि वह 'पनस्यु है-व्यवहार का उपदेश देने का इच्छुक है। मनुष्य के पारस्परिक व्यवहार में त्रुटि न आये, सभी पदार्थों के गुणधर्म उसे ज्ञात हो सकें, इस दृष्टि से करुणानिधान सर्वगुणखान भगवान् ने सर्गारम्भ में मनुष्यों को वेदज्ञान दिया। वही सच्चा ज्ञान है।

ऋग्वेद के दशममण्डल का ७१वाँ सूक्त 'ज्ञानसूक्त' है। इसमें वेदोत्पत्ति का वर्णन बहुत सुन्दर शब्दों में है। वहाँ पहले मन्त्र में बृहस्पति=ज्ञानपति भगवान् से वेदोत्पत्ति बतलाकर मानो एक शङ्का का समाधान करने के लिए दूसरे मन्त्र की रचना है। शङ्का यह है कि जब भगवान् ने मनुष्य के हृदय में ज्ञान दिया, क्या उच्चारण करते समय उसने उसमें अपना कुछ नहीं मिलाया? इसका समाधान-

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।।

-ऋ० १०।७१।२

जैसे चालनी (छाननी) से सत्तू साफ़ किये जाते हैं, ऐसे ही उन धीरों ने मन से वाणी को किया, अर्थात् शुद्ध वाणी ही बाहर आने दी, क्योंकि भगवान् के सखा सखित्व के नियमों को जानते हैं, उनकी वाणी पर कल्याणकारी श्री विराजती है, अर्थात् सर्गारम्भ के वेदप्रापक ऋषियों ने शुद्ध परमात्मप्रदत्त ज्ञान ही उच्चारण किया था। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनू बलम्।
तत् सर्वमनु मन्यन्तां देवा ऋषभदायिने।।

-अथर्व० ९.५.२०

भावार्थ-जो ब्रह्मचारी महात्मा लोग परमात्मा का वेद द्वारा उपदेश करते हैं उनके स्थानों में वेद विद्याओं का प्रचार और पुत्र-पौत्र तथा शिष्यादि वर्ग और इन उपदेशक महानुभावों का शारीरिक बल भी अवश्य होना चाहिये। संसार के बुद्धिमान् विद्वानों का कर्त्तव्य है कि ऐसे वेद द्वारा ब्रह्मज्ञान का उपदेश करने वाले महानुभावों के लिए सब उत्तम पदार्थ प्राप्त करावें। जिससे किसी बात की न्यूनता न होकर वेदों का तथा ईश्वर-भक्ति का प्रचार सदा होता रहे।

यत्र देवा ब्रह्मविदो ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते।
यो वै तान् विद्यात् प्रत्यक्षं स ब्रह्मा वेदिता स्यात्।।

-अथर्व० १०.७.२४

भावार्थ-जो विद्वान् पुरुष ब्रह्मज्ञानियों से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करते हैं वे ही संसार में तत्त्वदर्शी महापण्डित विद्वान् होते हैं। बिना गुरु परम्परा के कोई भी वेद व परमात्मा के जानने वाला नहीं हो सकता।

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो हिमवतामुत।
गर्भो विश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि।।

-अथर्व० ६.९५.३

भावार्थ-जो मनुष्य परमेश्वर से उत्पन्न हुए पदार्थों के गुण जान कर प्रयोग करते हैं वे संसार में सुख भोगते हैं। इसलिए हम सबको चाहिए कि सूर्यादि उष्ण और जल, मेघ आदि शीत पदार्थों के आश्रय परमात्मा की भक्ति करते और ईश्वर रचित पदार्थों से अपना काम लेते हुए सुख को भोंगे।

वैदिक पथ प्रशस्ति का पहला कदम बोध पर्व

ले.-डा. सुशील कुमार वर्मा, फाजिल्का

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि:।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।। (कठोपनिषद 5/15)

उसी के प्रकाश से सूर्य चन्द्र तारे विद्युत अग्नि प्रकाश देते हैं वही सभी को प्रकाशित करता है, उसी की अनुकम्पा से ज्ञान प्राप्त होता है उसी की कृपा से आत्मग्नि प्रज्जवलित होती है। यही कुछ हुआ मूलशंकर के बाल्यकाल में पिता जन्म के औदीच्य ब्राह्मण थे, शिव के बड़े भक्त थे। वर्षों से ही आस्तिक हिन्दु शिवपुराण की मान्यता के अनुसार भगवान शिव की विशेष आराधना के लिए महाशिवरात्रि के व्रतोपवास का अनुष्ठान करते आए हैं। ऐसी ही शिवरात्रि उस मूलशंकर के जीवन में 1894 को आई। शिवदर्शन की प्रबल लालसा के वशीभूत वह नन्हा बालक मन्दिर में देर रात्रि में सभी के सो जाने के उपरान्त भी जागता रहा। शिवपिण्ड़ी पर चूहों की उछल कूद व वहाँ पर रखे मिष्ठान को बड़े आनन्द से खाते देखकर अचम्भित हो गया। सोचने पर विवश हो गया कि शिव तो त्रिशूलधारी है, सबका संहार करने वाला है। तो फिर क्या वह इन चूहों को भी नहीं हटा सकता। इन तुच्छ जीवों के भगाने का भी सामर्थ्य नहीं है उस में। मूर्ति पूजा की आस्था यही से विध्वंस हो गई। शिव पिण्डी का दृष्य उसे बार बार झंकोरता रहा कि क्या यही शिव है? दुनिया जिसे महादेव कहती है, वह अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा तो संसार की रक्षा कैसे कर पाएगा? यहीं से उस बालक का बोध जागृत हुआ, आत्मग्नि प्रज्जवलित होने लगी गीता के कथनानुसार-

''या निशा सर्वभूतानां तस्या जागृर्ति संयमी''

हृदय में भक्ति का नया उदय हुआ। परिणामत: जीवन भर के लिए इस पूजा पद्धति से हमेशा हमेशा के लिए नाता तोड़ लिया। फिर बड़े से बड़े प्रलोभन, भय, आपत्ति भी उसका सिर मूर्ति के समक्ष न झुका सकी। क्योंकि आत्मग्नि का संचार प्रारम्भ अपना आकार ले रहा था।

इस घटना के पश्चात् 16वें वर्ष में बहिन की मृत्यु, 19वें वर्ष में चाचा का देहान्त। तत्पश्चात् वैराग्य अग्नि ने अपना प्रचण्डरूप धारण कर लिया। वैराग्य ग्रस्त बालक ईष्ट-मित्रों से प्रभुदर्शन, मोक्ष प्राप्ति और मृत्युञ्जय बनने के उपाय पूछता रहा। अन्तत: घर का त्याग कर दिया। पिता के अनथक प्रयास भी उसे रोक न पाए। नैष्ठिक ब्रह्मचारी की दीक्षा प्राप्त कर शुद्ध चैतन्य नाम पाया। 1847 में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से दीक्षित होकर दयानन्द सरस्वती नाम धराया। मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती नाम पाने तक कितना प्रभाव था उस शिवरात्रि का जिसे हम आज बोधरात्रि का नाम लेकर उस महान विभूति से अनुगृहीत हो रहे हैं। परमपिता परमात्मा जब किसी का विशेष उद्देश्य के लिए चयन करता है तो उसकी अनुकम्पा स्पष्ट दिखाई देती है। आत्मा जागृत हो उठती है। कठोपनिषद् इस प्रक्रिया को स्पष्टत: उद्धत करती है। (कठोपनिषद् २/२३)

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूस्वाम्।।

अर्थात् जिसे वह वर लेता है वही इसे प्राप्त कर सकता है, उसके सामने आत्मा अपने स्वरूप को खोल कर रख देता है।

उस आत्मा की तृप्ति के लिए, सच्चे शिव की तलाश में न जाने कहाँ कहाँ वह दयानन्द भटकता रहा, दुर्गम से दुर्गम स्थानों का भ्रमण करता रहा। पाखण्डियों व धूर्त लोगों से प्रताड़ित होता रहा अन्ततोगत्वा 1855 में दयानन्द अपने दीक्षा प्रदान वाले गुरु से विद्याध्ययन की इच्छा प्रकट की। उनका उत्तर था कि मथुरा जाओ और गुरु विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण करो। वही तुम्हारा मनोरथ पूरा करेंगे।

अन्तत: 1860 में मथुरा निवासी गुरु विरजानन्द के चरणों में नतमस्तक हुए। अपने आप को गुरु चरणों में निष्ठापूर्वक समर्पित करने के लिए पहली भेंट यह करनी पड़ी कि जो पुस्तक पढ़ी हैं वे सब यमुना के अर्पण कर दो। हस्त लिखित पुस्तकें बड़ी कठिनता से प्राप्त हुई थी, परन्तु गुरु का आदेश सरल न था, मन कड़ा किया और गुरु आज्ञा का पालन किया। 1860 से लेकर 1863 तक गुरु से शिक्षा ग्रहण की। शिक्षापूर्ण करने के बाद गुरुवर ने जो दक्षिणा में चाहा वह बहुत महत्त्वपूर्ण था। उन्होंने कहा ''संसार अज्ञान की निद्रा में सो रहा है, उसे जगाओ। वेद के सूर्य को फिर से चमकाकर संसार को सुखी बनाओं। यही मेरे लिए सबसे बड़ी दक्षिणा है। धन्य है वह गुरु और धन्य है वह शिष्य जिन्होनें भारत की गरिमा को उच्चतर शिखर तक पहुँचाया।

ऋषि दयानन्द का सबसे अधिक महत्त्व इस बात का है कि उन्होनें अपने आप को मिटा कर वेद मार्ग को सर्वोत्तम बताया। अपने नाम पर उन्होनें कोई धर्म, सम्प्रदाय नहीं चलाया, उनका तो उद्देश्य यही रहा कि जो वेदानुकूल है वहीं स्वीकार्य है। भारत में जितने भी मत अथवा पन्थ स्थापित हुए, वे वैदिक धर्म को तिरस्कार कर ही स्थापित हुए। नए तीर्थों, नए संस्कार, नए देवता, नई मूर्त्ति पूजा नए ढ़ंग से प्रारम्भ की। ऋषि मुनियों, महापुरुषों के द्वारा अपनाए गए वेद मार्ग को तिरोहित कर अपने गुरु, अपने देवता बनाए। आर्ष ग्रन्थों को तिलाजंलि दे नए ग्रन्थों का निर्माण हुआ। निराकार परमात्मा का स्थान अवतारवाद ने ले लिया। नए ठेकेदार अपनी कथित धर्म की दुकानें खोलने में सलंग्न थे। नारी शिक्षा का नाम नहीं था नारी को तिरस्कृत किया जाता रहा। वेद को पढ़ना तो दूर, नारी और शूद्र को वेद सुनने का अधिकार ही नहीं था। जो कथित पंडितों ने जो संस्कृत वाक्य बोल दिए वहीं ग्रन्थ व शास्त्र मान लिए जाने लगे। ऋषि दयानन्द का उद्घोष था, ''तुम जो चाहो, वह वेद नहीं, वेद जो है वही मान्य है।''

आर्य समाज की स्थापना तो स्वामी दयानन्द जी ने 1875 में की परन्तु उसकी नींव तो गुरु विरजानन्द ने जब मथुरा में वहाँ के प्रसिद्ध पण्डित कृष्ण शास्त्री से शास्त्रार्थ हुआ था, तब ही यह बीज रूप आर्यसमाज अंकुरित हो गया था। इस शास्त्रार्थ से उनका अनार्ष ग्रन्थों के प्रति इतना आक्रोश बढ़ गया था कि उन्होनें उस समय के तथाकथित विद्वानों से किनारा कर दिया था। परिणामत: कौमुदी, मनोरमा, शेखर व्याकरण को तिलाजंलि दे, अष्टाध्यायी और महाभाष्य को स्वीकार कर शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी। इस प्रकार आर्ष और अनार्ष ग्रन्थों की कसौटी ने वैदिक परम्परा को पुनर्जीवित कर दिया। यही आज्ञा स्वामी दयानन्द के लिए कि वह आर्ष ग्रन्थों का ही प्रचार करेगें। उसी के परिणाम स्वरूप वे मूलशंकर से दयानन्द और फिर ऋषि दयानन्द अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती बन भारत को, भारत की वैदिक परम्परा वैदिक संस्कृति को गौरवान्वित किया।

आज हम शिवरात्रि दिवस पर उस दिव्य आत्मा को स्मरण कर रहे हैं जिसे आज के ही दिन दिव्य बोध हुआ। आज से ही मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती की यात्रा प्रारम्भ होती है। शिव की तलाश में भारतीय समाज को एक नई दिशा प्रदान की। पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास, श्राद्ध-तर्पण एवं अवतारवाद का खण्डन कर वेद मार्ग का रास्ता बताया। 1875 में स्थापित आर्य समाज ने एक नई क्रान्ति ला दी। स्वतन्त्रता संग्राम में 85 प्रतिशत से भी अधिक क्रान्तिकारी आर्यसमाजी ही थे। पाखण्ड़ों एवं अन्धविश्वासों के खिलाफ, वेदों के वास्तविक रूप का ज्ञान हुआ। आज गुरुकुल एवं डी.ए.वी. संस्थानों द्वारा भारतीय संस्कृति एवं वेदों के मार्ग पर चलने के सन्देश दिए जाते हैं। यह सब उस देवदयानन्द की देन हैं जिनका उद्देश्य ही था जन कल्याण वेदों द्वारा।

धन्य है वह ऋषि जिसने सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, साहित्यक, मानवीय एवं राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। सामाजिक व्यवस्था, स्वराज्य स्थापना, जातपात का भेदभाव, विधवा विवाह,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

आनन्द और मिलन का पर्व-होली

संसार के सभी मनुष्यों, सम्प्रदायों, जातियों और राष्ट्रों में कुछ ऐसे विशेष नियत दिन हैं जिन पर वे अपने विशेष मनोभावों के द्योतनार्थ विशेष कृत्य करते हुए देखे जाते हैं। इन विशेष अवसरों पर किए जाने वाले वाले कृत्यों को ही पर्व या त्यौहार कहा जाता है। आर्यों का कोई नित्य या नैमित्तिक कर्म ऐसा न मिलेगा, जिसमें धर्म का सम्पर्क न हो। नित्य के कर्मों में सारी दिनचर्या और रात्रिचर्या का धर्मरूप से ही उपदेश दिया गया है। प्रात:काल उठने, शौच, स्नान, सन्ध्योपासना, आपस के परस्पर व्यापार और भोजन करने से लेकर रात्रि के शयन तक सब कुछ धर्म के नाम से ही बतलाया गया है। इसलिए आर्यों के नैमित्तिक कर्म पर्व या त्यौहार भी धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं, यही आर्य जाति के पर्वों की विशेषता है। ऐसे ही पर्वों में एक पर्व होली है। हमारे देश में अन्य पर्वों की तरह होली का पर्व भी आनन्द और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी छोटे बडे आपसी मतभेदों को भूलकर एक-दूसरे के गले लगते हैं। होली का त्यौहार भारत के सभी प्रान्तों में मनाया जाता है। इस पर्व पर लोग ऊंच नीच , छोटे-बडे का विचार छोड कर स्वच्छ हृदय से आपस में मिलते हैं। यदि किसी कारणवश वर्ष में वैर विरोध ने मनों को अपना आवास बना लिया है तो उसको अग्निदेव की साक्षी में भस्मसात् कर दिया जाता है। अत: होली प्रेमसार का पर्व है। यह दो हृदयों को मिलाती है, एकता का पाठ पढ़ाती है। यह वर्ष भर प्रेम में तन्मय हो जाने को सबसे उत्तम साधक है। आज घर-घर मेल मिलाप है, घर-घर वर्ष भर के वैरी एक दूसरे को गले लगाकर फिर भाई-भाई बन जाते हैं। इस पर्व पर बाल वृद्ध वनिताओं की उल्लास भरी उमंगें कलह क्लेश और द्वेष भाव के विचारों का विलोप कर देती हैं। होली के शुभ अवसर पर भारत में हर्ष की कल्लोल -मालाएं उठती हैं।

होली का पर्व भारतवर्ष में सभी लोगों में समान रूप से मनाया जाता है। होली का पवित्र पर्व वस्तुत: आनन्द और उल्लास का महोत्सव है, परन्तु समय के साथ-साथ इस पर्व के साथ भी अनाचार और अभद्र दृश्यों का समावेश हो गया। आजकल जिस प्रकार से हमारे हिन्दु भाई होली का त्यौहार मनाते हैं उसको देखकर क्या कोई बुद्धिमान, धार्मिक पुरूष यह मान सकता है कि यह होली जिसको देखकर शिक्षित और सज्जन विदेशी लोग हमें नीमवहशी का खिताब देते हैं। क्या यह परम्परा हमारे उन्हीं पूर्वजों की चलाई हुई हो सकती है जिनकी विद्या और बुद्धि को देखकर सारा संसार बिस्मित है और जिनके रचित ग्रन्थों और शिल्प निर्माणों को देखकर क्या स्वदेशी क्या विदेशी सभी सहस्र मुख से उनकी उच्च सभ्यता की प्रशंसा करते हैं। क्या आजकल होली का फूहड़ नृत्य, अश्लील शब्दों का उच्चारण हमारे उन ऋषियों और ब्राह्मणों का चलाया हो सकता है जिनके सिद्धान्त में मन में भी ऐसे अश्लील और जघन्य विचारों का सोचना तक पाप समझा जा सकता है। क्या आजकल की होली में स्त्रियों के साथ होली खेलना, रासलीला जैसे नृत्य करना उन आर्य पुरूषों का चलाया हो सकता है जो पराई स्त्री को माता के समान समझते थे और उनको प्रणाम करते हुए उनके चरणों को छोड़कर अन्य अंगों पर दृष्टिपात तक करना पाप समझते थे। रामायण में एक दृश्य आता है कि जब माता सीता को रावण अपहरण करके ले गया था, तब वे विलाप करती हुई अपने आभूषण और चीर मार्ग में फैंकती गई थी। ये आभूषण एक पोटली में बन्धे हुए सुग्रीव के महामन्त्री हनुमान ने उठाए थे। उन्होंने इस आशा से फैंक दिए थे कि सम्भव है ये राम को मेरा वृतान्त बता सके। जब सुग्रीव और राम की मित्रता हुई तो सुग्रीव ने उन आभूषणों को राम के समक्ष प्रस्तुत किया, उस समय शोक संतप्त राम ने अपने प्रिय भाई लक्ष्मण से पूछा कि देखो क्या ये आभूषण तुम्हारी भाभी सीता के ही हैं? उस समय यतिवर लक्ष्मण के उत्तर को आदि कवि वाल्मीकि इस प्रकार वर्णन करते हैं-

नाहं जानामि केयुरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे तु अभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।।

आजकल होली के त्यौहार में जिस प्रकार के अश्लील दृश्य देखने को मिलते हैं, उससे अनेक प्रकार की कुरीतियां समाज के अन्दर फैल रही हैं। पर्वों को उत्साह के साथ मनाना अच्छा है परन्तु उसके साथ जब अश्लीलता जुड़ जाती हैं तो पर्वों का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। होली का त्यौहार भी ऐसा ही है जिसमें समय के साथ-साथ अनेक प्रकार की काल्पनिक घटनाओं, अश्लील नृत्यों को जोड़ दिया गया। आजकल होली में जो मद्या, भांग आदि पीकर उन्मत होकर बुद्धि जैसे उत्तम और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के देने वाले पदार्थ का नाश करके ईश्वर के अपराधी बनते हैं, उनसे बढ़कर और कौन पाप का भागी बन सकता है?

इस आधुनिक रंग बिखेरने और गुलाल उड़ाने की कुप्रथा का मूल प्राचीन काल में यह प्रतीत होता है कि पुराने भारतवासी इस आमोद-प्रमोद के पर्व पर कुसुमसार आदि सुगन्धित द्रव्यों को परस्पर उपहार के रूप में व्यवहार में लाते थे। सम्भव है कि सम्मिलित बन्धु-बान्धवों के द्वारा उसे एक दूसरे के ऊपर छिडका जाता हो। परन्तु वर्तमान के रंग डालने के जो दृश्य देखने को मिलते हैं उसमें उन प्राचीन भावनाओं का कोई समावेश नहीं दिखाई देता। पौराणिकों में होली के उत्सव के विषय में यह कथा प्रचलित है कि इस अवसर पर अत्याचारी दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने अपने ईश्वर प्रेमी पुत्र प्रह्लाद के सजीव दाह के लिए अपनी मायाविनी बहन होलिका द्वारा चिता रचवाई थी। उसने सोचा था कि होलिका अपनी राक्षसी माया से प्रह्लाद को जलाकर आप चिता से सुरक्षित निकल आएगी। किन्तु परमात्मा की असीम कृपा के कारण भक्त प्रह्लाद का बाल भी बाँका नहीं हुआ और राक्षसी होलिका उस चिता में जलकर राख हो गई और उसी दिन से होलिका दाह और प्रह्लाद के सुरक्षित रहने के उपलक्ष्य में होलिकोत्सव प्रचलित हुआ। इस पौराणिक दन्त कथा से भी हम सत्य दृढ़ता वा सत्याग्रह की शिक्षा ले सकते हैं।

होली का पर्व एक पावन और पवित्र पर्व है। इस पर्व में अश्लीलता के कोई स्थान नहीं है। होली के नाम पर नशा करके अश्लील हरकतें करना पर्व की पवित्रता से खिलवाड़ है। हमें अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के अनुसार पर्वों के सही स्वरूप को जानकर उन्हें मनाना चाहिए। होली का पर्व हमें सभी वैर, द्वेष, आदि बुरी भावनाओं को समाप्त करके आपस में मिलने का सन्देश देता है। हम अपने ऋषियों, मुनियों तथा महापुरूषों के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर अपने पर्वों को शुद्ध स्वरूप को जान सकते हैं। यह हम सभी का कर्त्तव्य बनता है कि समय के साथ-साथ इस पर्व के साथ अश्लीलता के जो दृश्य जोड़ दिए गए हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करें। होली का त्यौहार हमें प्रेरणा देता है कि जो हो ली अर्थात् जो बीत गई है उसे भुलाकर हम अपने नए जीवन का प्रारम्भ करें। अपने मन के छल कपट, द्वेष आदि भावनाओं को दूर करके सबके साथ गले मिलना चाहिए।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

वेद और मानवाधिकार घोषणा पत्र

ले.-शिवनारायण उपाध्याय दादावाड़ी कोटा, (राजस्थान)

(गतांक से आगे)

जबकि संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों ने संविधान के प्रति अपने विश्वास को पुन: स्वीकृति प्रदान की है। जिसमें कि मानव जाति के मौलिक अधिकारों, मानव जाति की महत्ता एवं मूल्यांकन तथा स्त्री एवं पुरूष को समानाधिकारों की स्वीकृति दी है और यह दृढ़ निश्चय व्यक्त किया है कि सामाजिक विकास को गति दी जावे तथा स्वतंत्रता के विस्तृत क्षेत्र में बेहतर जीवन स्तर स्थापित किया जावे। जबकि सभी संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों में संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से विश्व भर में मानव अधिकार एवं मौलिक स्वतंत्रता का विकास करने की शपथ ली है। जबकि इन अधिकारों एवं स्वतंत्रता की एक सामान्य समझ इस शपथ के महत्व को पूर्ण स्वीकृति के रूप में बतावेगी। इसलिए अब हम साधारण सभा मानवाधिकार की वैश्विक घोषणा सभी राष्ट्रों के सभी सामान्य नागरिकों के अधिकारों की प्राप्ति की अन्त में प्रत्येक व्यक्ति तथा समाज के प्रत्येक अंग इस घोषणा पत्र को मस्तिष्क में रखते हुए शिक्षा तथा उद्देश्यों के माध्यम से आगे बढ़ाने की घोषणा करते हैं।

और विकासोन्मुख कार्यों के द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में इनकी अद्वितीय एवं प्रभावी मान्यता एवं देख रेख, सदस्य राष्ट्रों के निवासियों एवं जिन भागों में वे शासन कर रहे हैं करके दिखावें। भूमिका में व्यक्त इन आदर्शों की पूर्ति हेतु 30 धाराएं भी पारित की गई जो संक्षेप में इस प्रकार हैं-

(1) सभी मानव स्वतंत्र एवं महत्व तथा अधिकारों की समान स्थिति में उत्पन्न हुए है। वे सभी तर्क एवं चेतना से युक्त हैं और उन्हें एक दूसरे के साथ भाई चारे के सम्बन्ध को विकसित करना चाहिए।

(2) प्रत्येक व्यक्ति घोषणा पत्र में बताई गई स्वतंत्रता एवं अधिकार का बिना किसी भेदभाव के जैसे कि जाति, वर्ग, लिङ्ग, भाषा, धर्म, राजनीतिक एवं विचार राष्ट्रीय अथवा सामाजिक उत्पत्ति धन एवं दूसरी स्थिति के अधिकारी है।

(3) प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन, स्वतंत्रता एवं सुरक्षा का अधिकार है।

(4) किसी भी व्यक्ति को दासता या आजीवन बंधक के रूप में नहीं रखा जा सकेगा तथा दासता एवं दास व्यापार को सभी रूपों में निरस्त किया जाता है।

(5) किसी भी व्यक्ति को सताया अथवा निर्दय मानवीय अथवा सम्मान को गिरने अथवा दण्ड दिये जाने से रोका जावेगा ऐसा नहीं होने दिया जावेगा।

(6) प्रत्येक व्यक्ति को कानून के सामने प्रत्येक स्थान पर बराबर माना जावेगा।

(7) कानून के सामने सब बराबर होगें और प्रत्येक को बिना किसी भेदभाव के समान सुरक्षा दी जावेगी। इस घोषणा पत्र के अनुरूप सभी सुरक्षा के समान अधिकारी हैं। इस घोषणा पत्र के अधिकारों में किसी प्रकार की कमी अथवा हेरा-फेरी का विरोध करने का सबको समान अधिकार है।

(8) संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों पर रोक लगाने अथवा उल्लंघन करने पर प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्रीय न्यायालय में जाने का अधिकार है।

(9) किसी भी व्यक्ति को अकारण गिरफ्तार नहीं किया जावेगा और न ही उसे देश से निकाला जा सकेगा।

(10) किसी भी व्यक्ति को किसी भी स्वतंत्र एवं पक्षपात रहित न्यायालय के सामने अपने अधिकारों के निश्चित कराने तथा गैर संवैधानिक ढंग से उसके अधिकारों पर रोक लगाने पर अथवा उस पर किसी अपराधिक चार्ज लगाने पर उपस्थित होने का तथा बिना पक्षपात के न्याय पाने का अधिकार है।

(11) (1) किसी भी व्यक्ति को जिस पर अपराधिक चार्ज लगा है जब तक अपराध सिद्ध न हो जाय निर्दोष माने जाने का अधिकार है और उसको अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अधिकार है। (2) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कानून में व्यक्ति के द्वारा किये गए उस कार्य को अपराध की श्रेणी में नहीं माना जावेगा।

(12) किसी भी व्यक्ति को उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अपनी गुप्तता, परिवार, घर अथवा पत्र व्यवहार पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जावेगा न उसके सम्मान पर चोट की जावेगी। प्रत्येक व्यक्ति को कानून के द्वारा इस प्रकार के दखल पर सुरक्षा दी जावेगी।

(13) (1) अत्याचार से बचने के लिए किसी भी व्यक्ति को किसी दूसरे देश में शरण लेने का अधिकार है, आनन्द से रहने का अधिकार है।

(2) परन्तु कानून का लाभ लेने के वे अराजनैतिक लोग अधिकारी नहीं है जो जान बूझकर किये गए अपराधों के कारण दण्ड पाने वाले हैं और जो घोषणा पत्र के विरोधी कार्यों में लिप्त है।

(14) (1) किसी भी व्यक्ति को अपने देश की सीमा में कहीं भी आने-जाने तथा बसने की स्वतंत्रता होगी। (2) किसी भी व्यक्ति को यह भी स्वतंत्रता है कि चाहे वह किसी देश को जिसमें उसका देश भी सम्मिलित है छोड़ दे और अपने देश में आ भी जावे।

(15) (1) प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्रीयता प्राप्त करने का अधिकार है।

(2) किसी भी व्यक्ति को गलत ढंग से उसकी राष्ट्रीयता को बदलने से रोका जा सकेगा।

(16) (1) पूर्ण व्यस्क स्त्री पुरूष को बिना किसी जाति राष्ट्रीयता, धर्म के भेद से विवाह बन्धन में बंध जाने का पूर्ण अधिकार है। उन्हें परिवार बनाने का अधिकार है। उनको विवाह के समय तथा विवाह के बाद तलाक देने का भी समान अधिकार है।

(2) विवाह केवल इच्छुक वर वधू की पूर्ण स्वेच्छा से ही सम्पन्न होगा।

(3) परिवार समाज की ईकाई है और समाज तथा राज्य को उसकी रक्षा करनी चाहिए।

(17) (1) प्रत्येक व्यक्ति को अकेले अथवा दूसरों के साथ मिल कर सम्पत्ति अर्जित करने का अधिकार है। (2) किसी भी व्यक्ति को उसकी सम्पत्ति से गलत तरीके से च्युत नहीं किया जा सकेगा।

(18) प्रत्येक व्यक्ति को अपने विश्वास चेतना एवं धर्म पर पूरा अधिकार होगा। इस अधिकार में अपना विश्वास अथवा धर्म परिवर्तन करने का अधिकार भी सम्मिलित है। उसे अकेले अथवा समूह में इनके प्रचार प्रसार की भी स्वतंत्रता है।

(20) (1) प्रत्येक को शांतिपूर्ण ढंग से इकट्ठा होने तथा सभा करने का अधिकार है।

(2) किसी भी व्यक्ति को किसी संस्था विशेष का सदस्य बनने को बाधित नहीं किया जा सकता है।

(21) (1) प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश की सरकार में सीधे अथवा चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से भाग लेने का अधिकार है।

(2) प्रत्येक व्यक्ति को अपने राष्ट्र की सेवा करने का अधिकार है।

(3) किसी भी सरकार का अधिकार लोक मत पर निर्भर करता है, इसको समय-समय पर होने वाले विभिन्न चुनावों द्वारा प्रजा प्रदर्शित करती है। और ये चुनाव गुप्त मतदान द्वारा व्यक्ति के स्वतंत्र निर्णय द्वारा होते हैं।

(23) (1) किसी व्यक्ति को कार्य करने का स्वतंत्रता पूर्वक उसे चुनने का तथा न्याय पूर्ण कार्य करने की शर्तें तथा बेरोजगारी के विरूद्ध सुरक्षा का अधिकार है।

(2) प्रत्येक को समान कार्य के लिए समान वेतन पाने का अधिकार है।

(3) जो व्यक्ति कार्य करता है उसे न्यायोचित मजदूरी मिलनी चाहिए जिससे कि उसका तथा परिवार का भरण-पोषण हो सके तथा वह मानवीय गरिमा के अनुरूप अपना जीवन निर्वाह कर सके और यदि आवश्यक हो तो उसे दूसरे ढंग से सामाजिक सुरक्षा दिलाने जाने का अधिकार है। **(क्रमश:)**

वेदाकालीन मन्त्रिमण्डल

ले.-डा. बलवीर आचार्य भूतपूर्व रीडर संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरयाणा

(गतांक से आगे)

रत्नी-सूची के पुरोहित के सम्बन्धों में एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शतपथ ब्राह्मण में पुरोहित का स्थान सेनानी के पश्चात् है तथा पंचविश् ब्राह्मण के वीरों की सूची में उसका नाम राजभ्राता और राजपुत्र के अनन्तर है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि उस काल में धीरे-धीरे पुरोहितों का महत्त्व भी घटता जा रहा था।

ऐतरेय ब्राह्मण में पुरोहित के विषय में विस्तृत चर्चा की गई है वहाँ कहा गया है कि देवता पुरोहित विहीन राजा के अन्न को स्वीकार नहीं करते, इसलिए यज्ञ की इच्छा वाले राजा को एक पुरोहित रखना चाहिए कि ''देवता मेरे अन्न को ग्रहण कर लें।'' राजा पुरोहित का संपादन करता है वह स्वर्ग को ले जाने वाली अग्नियों को स्थापित करता है। पुरोहित ही राजा का आहवनीय अग्नि है, स्त्री गार्हपत्य है पुत्र दक्षिणाग्नि है। राजा पुरोहित के लिए जो कुछ करता है वह आहवनीय अग्नि में होम करने के समान है। पुरोहित के द्वारा वे अग्नियाँ अपने उग्ररूप को छोड़कर अभीष्ट होम से प्रसन्न होकर इस राजा को स्वर्ग पहुँचाती हैं। पुरोहित की प्रसन्नता से मन के उत्साह रूप शौर्य को, शारीरिक बल को, राष्ट्र को और प्रजा को प्राप्त कराने वाली होती है। अभीष्ट होम के अभाव में यदि ये उग्र रूप धारण कर लें तो अप्रसन्न होकर वे ही इस राजा को स्वर्ग लोक से गिरा देती हैं, उसे शौर्य से, शारीरिक बल से, राष्ट्र से और प्रजा से च्युत कर देती हैं।

आलंकारिक रूप से इस विषय का विस्तार करते हुए ब्राह्मण कार कहते हैं-यह पुरोहित उपद्रव कारिणी क्रुद्ध पाँच शक्तियों वाला वैश्वानर अग्नि है। उसकी वाणी में एक शक्ति होती है, दोनों पैरों में एक, त्वचा में एक, हृदय में एक और उपस्थ में एक शक्ति होती है। उन जलती हुई पाँच शक्तियों के साथ पुरोहित राजा के पास आता है। जब राजा कहता है-हे भगवन्। अब तक आप कहाँ रहे? और सेवकों से कहता है-हे परिचारकों! तृण निर्मित आसन पुरोहित के लिए लाओ। राजा के इन प्रिय वचनों से पुरोहित की वाणी में जो बाधिका शक्ति होती है, उसका शमन हो जाता है। इसके बाद जब पुरोहित के चरण प्रक्षालन के लिए जल आता है तो जो उसके पैर की क्रुद्ध शक्ति होती है, उसे वह शान्त करता है। इसके बाद जब उसे वस्त्रादि से अलंकृत किया जाता है। तब उसकी त्वचा में जो क्रुद्ध शक्ति होती है उसका शमन हो जाता है। तत्पश्चात् जब धन आदि के द्वारा उसे तृप्त करते हैं तो उसके हृदय में जो क्रुद्ध शक्ति होती है वह शान्त हो जाती है। जब वह पुरोहित राज प्रसाद में बिना किसी बाधा के उन्मुक्त रूप से विचरण करता है तो उसके उपस्थ की अग्नि शान्त होती है।

इस प्रकार होम के द्वारा प्रसन्न एवं शान्त शरीर वाला वह पुरोहित राजा को स्वर्गलोक पहुँचाता है और उसे शौर्य, शारीरिक बल, राष्ट्र एवं प्रजा से समृद्ध करता है। वही पुरोहित यज्ञ के अभाव में अशान्त शरीर एवं अप्रसन्न होकर राजा को स्वर्ग लोक से वञ्चित कर देता है और उसे शौर्य, बल, राष्ट्र एवं प्रजा से भी च्युत कर देता है।

पुरोहित वरण:

पुरोहित का वरण करते समय राजा निम्न मन्त्र का उच्चारण करता है-

''भूर्भुव: स्वरोममोऽहमस्मि, स त्वं; स त्वमस्योऽहं, द्यौरहं पृथिवी त्वं, सामाहमृक्त्वं, तावेव संवहावहै।''

पुरोहित का वरण कर लेने पर राजा द्वारा प्रदान किये गये आसन का पुरोहित अभिमन्त्रण करता है। तत्पश्चात् अभिमन्त्रित आसन पर वह बैठता है। उसके बाद राजा पाद प्रक्षालन के लिए जल देता है। पुरोहित उस जल को देखता हुआ, मन्त्र पाठ करता है-

''अस्मिन् राष्ट्रे श्रियमावेशयाम्यतो देवी: प्रतिपश्याम्याप:।

अर्थात् हे जल! मैं पुरोहित इस राष्ट्र में धन-सम्पदा का सम्पादन करता हूँ। अत: मैं द्योतनात्मक तुम दिव्य जलों की ओर देखता हूँ।

पाद प्रक्षालन के पश्चात् अवशिष्ट जल का अभिमन्त्रण करते हुए कहता है-''पैरों के धोने से बचा हुआ यह जल मेरे शत्रु को भस्म करे।''

इस प्रकार पुरोहित की वरण विधि में भी राष्ट्र की रक्षा का दिव्यभाव विद्यमान है।

पुरोहित की योग्यता

राजा का पुरोहित कैसा होना चाहिए इस विषय में ऐतरेय ब्राह्मण में बताया गया है कि जो ब्राह्मण तीन पुरोहितों और उसके तीन पुरोधाताओं का पूर्ण ज्ञाता हो, वह राजा का पुरोहित होना चाहिए। ये तीन पुरोहित अग्नि, वायु और आदित्य और उनके क्रमश: तीन पुरोधाता पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ हैं। राजा के लिए पुरोहित की आवश्यकता व्यक्त करते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है कि जिस राजा का ऐसा ब्राह्मण राष्ट्र का रक्षक पुरोहित होता है, दूसरे राजागण उस राजा के मित्र बन जाते हैं और वह अपने शत्रुओं को जीत लेता है। वह क्षण से क्षण को और बल से बल को जीत लेता है। जिस राजा का ऐसा राष्ट्ररक्षक ब्राह्मण पुरोहित होता है उसकी प्रजा: (विश:) उसको निरन्तर एवं एकमत होकर नमन करती हैं।

पुरोहित का पद वैदिक काल से ही बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। यह राजा का गुरु होता था और राजा को सन्मार्ग पर चलाने का प्रयास करता था। राजा के कार्यों के औचित्य और अनौचित्य का वह निर्णायक था। शासन की नीति के संचालन में भी उसका बहुत महत्त्व था। पुरोहित को यह अनिवार्य था कि वह राजनीति और धर्म दोनों प्रकार के शास्त्रों में निपुण होना चाहिए। राजा की अनुपस्थिति में वह शासन का संचालन भी कर सकता था।

पुरोहित का उपयोग अन्यत्र भी किया जा सकता था। प्राचीन ग्रन्थों और काव्यों में वर्णन है कि राजा लोग अपने विशेष महत्त्वपूर्ण सन्देशों को दूसरे राज्य में पुरोहित द्वारा भी भेजा करते थे।

पुरोहित के घर जाकर राजा जो याग करके हवि प्रदान करता था उसका देवता इन्द्र, हवि-कपाल पुरोडाश तथा दक्षिणा ऋषभ होती थी।

विधि का रक्षक:

पुरोहित पर गुरुतर कार्य विधि की रक्षा का होता था। न्याय का निर्णय राजा स्वयं नहीं कर सकता था। उसको पुरोहित से विधि की व्याख्या कराकर निर्णय देना होता था। वैदिक काल में विधि के लिए पारिभाषिक शब्द धर्म था। इस शब्द की उचित जानकारी के अभाव में आधुनिक विचारक पुरोहित को मात्र धर्म का अधिष्ठाता मानते हैं, जबकि उसकी स्थिति प्रमुख न्यायधीश के रूप में परामर्श दाता की थी। विधि (धर्म) के नियमों को 'व्रत' कहा जाता था। विधि की रक्षा का भार मुख्य रूप से राजा और पुरोहित दोनों का होता था। इसी कारण इन दोनों को शतपथ ब्राह्मण में 'धृतव्रतौ' (अर्थात् संविधान के नियमों का रक्षक) कहा गया है।

सेनानी:

राज्यशक्ति को सुदृढ़ करने तथा उसे बाह्य एवं आन्तरिक भयों से सुरक्षित रखने के लिए सेना की अपरिहार्यता मानी गई है। राज्य के विरूद्ध बाह्य आक्रमणों एवं आन्तरिक उपद्रवों से राजा और प्रजा की रक्षा करने के लिए सेना का संगठन किया जाता है। राज्य के सात अंगों में सेना का बहुत महत्त्व है। अत: व्यवस्थित प्रकार की सेनाओं को संगठित करने के विस्तृत निर्देश वैदिक संहिताओं और प्राचीन शास्त्रों में दिये गये हैं। विविध प्रकार के आयुधों से सुसज्जित, सुसंगठित, मनुष्य आदि के समूह को सेना कहते हैं। राज्य के सात अंगों में सेना का वही स्थान है, जो शरीर में मन का है। राज्यरूपी वृक्ष के ये पुष्प पल्लव हैं। इससे स्पष्ट है कि जिस प्रकार मन के द्वारा आत्मा इन्द्रियों का संचालन करता है, उसी प्रकार राजा सेना के द्वारा राज्य का संचालन करता है। जिस प्रकार पुष्प पल्लवों से समृद्ध वृक्ष उन्नति का स्वरूप है, इसी प्रकार समृद्ध राज्य में ही सेनायें सशक्त हो सकती हैं। **(क्रमश:)**

राजनीति में धर्म का स्थानः वैदिक दृष्टिकोण

ले.-डॉ. सत्यदेव निगमालंकार वेद विभाग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

मनुस्मृति में राजनीति के साथ धर्मों के समन्वय को बहुत महत्त्व दिया गया है। वहाँ लिखा है कि जहाँ सभासदों के देखते-देखते धर्म-अधर्म के द्वारा और सत्य अनृत के द्वारा कुचला जाता है, वहाँ सभासदों का ही दोष होता है। धर्म नष्ट होने पर विनाश उपस्थित कर देता है और रक्षित होने पर रक्षा करता है। इसलिये राष्ट्र में धर्म का कभी हनन नहीं करना चाहिये। यदि राष्ट्र में धर्म पर अधर्म हावी हो जाता है तो चौथाई दोष अधर्म के कर्त्ता का होता है, चौथाई साक्षी देने वाले का, चौथाई सब सभासदों का और चौथाई राजा का होता है। इसलिए राजा को चाहिए कि वह धर्मासन पर बैठकर, समाहित होकर राज्यकार्यों को देखें। धर्म संशय के निर्णय के लिए राजा त्र्यवरा परिषद् का निर्माण करता है जिसमें एक विद्वान् ऋग्वेद का ज्ञाता, दूसरा यजुर्वेद का ज्ञाता और तीसरा सामवेद का ज्ञाता होता है। इस प्रकार वेदों की ही व्याख्या करने वाले मनु की दृष्टि में राजा धर्माध्यक्ष होता है। वेद में भी राजा को धर्माध्यक्ष, धर्मकृत् और धर्मणस्पति विशेषणों से स्मरण किया गया है-

राजा का प्रतिनिधि कह रहा है कि मैं प्रजाओं के राजा, अद्भुत गुणकर्मों वाले, धर्माध्यक्ष, अग्रणी नृपति से जो निवेदन कर रहा हूँ उसे वह सुनें। शान्ति का अग्रदूत राजा धर्माधिपति है, प्रजा को पवित्र करने वाला है, बहुत धन सम्पन्न है। उसके चलाये हुए नियमों में सारे प्रजाजन चलते हैं। उस इन्द्र राजा के गीत गाओ, जो ज्ञानी है, धर्मकृत् है, विपश्चित् है और स्तुति के योग्य है।

ये मन्त्र राजा के धर्मानुकूल कार्य करने पर प्रकाश डालते हैं।

राजा को वेद में अग्रनायक और तेजस्वी होने के कारण 'अग्नि' तथा कान्ति का उपासक होने के कारण 'सोम' नाम से स्मरण किया गया है। इन नामों से स्मरण करता हुआ वेद राजा को कहता है-''तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम राज्य में धर्म कर्मों का पोषण करते रहो। हे अग्निस्वरूप राजन्! तुम अग्नि की तरह चमको, सहस्त्रजित् बनो, देवदूत और प्रशंसनीय बनो और धर्मों का पोषण करते रहो। ''हे शान्ति के अग्रदूत सोम नामक राजन्! आप पर्जन्य की तरह वर्षा करने वाले हो, सूर्य के समान देदीप्यमान हो, प्रजा में धर्म-कर्म ज्ञान-विज्ञान आदि की वर्षा करना आपका कर्त्तव्य है। आप वर्षक बनकर प्रजा में धर्मों का धारण-पोषण करते रहो।''

वेदों में अदिति राष्ट्रभूमि का नाम है। उसमें नियुक्त राज्याधिकारियों को आदित्य कहा गया है। उन्हें सम्बोधन करके वेद कहता है-''हे राज्याधिकारियों, जिसे तुम उत्कृष्ट नीतियों से ले चलते हो, और धर्म मार्ग पर चलाते हो वह मनुष्य दुरितों से पार होकर, अक्षत होकर उन्नति को प्राप्त करता है और पुत्रपौत्रादि प्रजाओं से बढ़ता है।''

राजा का एक नाम 'वायु' भी है, क्योंकि वह वायु के समान प्रगति करता है और दूसरों को प्रगति कराता है। वायु नाम से सम्बोधन करके उसे कहा गया है-''हे राजन् आप धर्म मर्यादा पर चलते हुए प्रजा की समस्त सम्भाव्य विपदाओं से रक्षा करते हो। हे राजन्, धर्मानुकूल आचरण करते हुए और प्रजा से करवाते हुए आप असुरों द्वारा किए जाने वाले उपद्रवों से प्रजा की रक्षा करते हो।''

कभी-कभी धर्म के नाम से राज्य में प्रदूषण भी चल पड़ता है। अनेक कुपन्थ चल पड़ते हैं, जो सच्चाई पर नहीं होते। भोले-भाले लोगों को प्रलोभनों द्वारा आकृष्ट करके उन्हें फंसाया जाता है। वेद के अनुसार राजा को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि राज्य में धर्म-प्रदूषण न होने दें। ''अग्नि नामक अग्रनायक राजा को चाहिए कि वह अमर अर्थात्-सजीव (जागरूक) होकर राष्ट्र में विद्वानों की पूजा करे और धर्म-प्रदूषण से राष्ट्र को बचाता रहे।''

जिस राज्य में धर्म का पालन नहीं होता वहाँ उच्छृंखलता बढ़ जाती है, प्रजाएँ अपने कर्त्तव्य की मर्यादा में रहना छोड़ देती है, अधार्मिक लोग अधर्म के कुचक्र चलाने लगते हैं, राज्य दूषित, कलंकित और अपवित्र हो जाता है। अतः वेद की दृष्टि में राजा का कर्त्तव्य है कि धर्मप्रचार द्वारा राष्ट्र की पवित्रता को स्थिर रखे। ''हे सोम राजन्, आप से निकलने वाली धर्म की किरणें राज्य के सभी स्थानों में पहुँच जाती हैं एवं धर्म के द्वारा आप राष्ट्र को पवित्र करते हो और सम्पूर्ण राष्ट्र के अधिपति होकर शोभा पाते हो।''

राष्ट्र में मित्र और वरुण नाम के दो राज्याधिकारी होते हैं। उन्हें सम्बोधन करके कहा गया है कि ''हे मित्र और वरूण नामक विद्वान् राज्याधिकारियों, आप दोनों धर्म का पालन करवा कर ही अपने व्रतों की रक्षा करते हो।''

'इन्द्र' नाम से राजा को आमन्त्रित करते हुए कहा गया है ''कि तुम धर्म से भी तीक्ष्ण हो, धर्म के द्वारा बलवान् होते हो।''' ग्रावा' नाम से विद्वानों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि ''प्रेरक सविता देव अर्थात्-परमेश्वर या राजा तुम्हारे अन्दर धर्म की प्रेरणा करे। तदनुसार तुम विद्यादानादि धर्मों के प्रचार में लग जाओ।'' 'इन्द्र' नाम से प्रजाजनों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि ''आप धर्म के मार्ग से चलो और धर्म की योजना कराना जानो, तभी तुम्हारी उत्तम कीर्ति होगी।''

इस प्रकार वेद के अनुसार राजा, राज्याधिकारीगण, प्रजाएं सबको धर्म-मार्ग पर चलना उचित है। जिस राष्ट्र में धर्म का पालन होता है, उस राष्ट्र के लोग राष्ट्र की उन्नति को देखकर सहसा पुकार उठते हैं- ''देखो, राष्ट्र की उन्नति का सूर्योदय हुआ है, जो धर्म पर आश्रित है। राज्य में धर्मानुकूल शासन होने से सब अमित्रे, वृत्र, दस्यु, असुर और सपत्न नष्ट हो गये हैं। हम चाहते हैं कि यह धर्मोदय सदा ही बना रहे और राष्ट्र उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुँच जाये।''

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज बठिंडा में...

शिवरात्रि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के जीवन में भी आई। महर्षि दयानन्द के पिता श्री कर्षन जी तिवारी एक कट्टर शिव भक्त थे और वे चाहते थे कि उनका बेटा मूलशंकर भी शिव का भक्त बनें। इसलिए उन्होंने बालक मूलशंकर से शिवरात्रि के अवसर पर व्रत रखने का आग्रह किया और उसमें श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए शिव की महिमा तथा शक्ति वर्णन किया और कहा कि जो पूरी श्रद्धा के साथ तथा बिना खाए पिए शिवरात्रि का व्रत रखता है उसे शिव के साक्षात् दर्शन होते हैं। बालक मूलशंकर के हृदय में भी सच्चे शिव के दर्शन करने की उत्कंठा जागृत हुई और उसने भी उपवास रख लिया। रात्रि को उनके पिता एक शिवालय में ले गए। जब शिवालय में पूजा अर्चना के करने के पश्चात एक-एक करके सभी नींद के वश में हो गए तो भी मूलशंकर आँखों में पानी के छींटे मार कर जागने का प्रयास करता रहा ताकि शिव के दर्शन किए जा सके। परन्तु आधी रात के समय जब उस शिवलिंग पर जब चूहे को प्रसाद खाते, मल-मूत्र विसर्जन करते हुए मूलशंकर को जो प्रेरणा मिली वही आज इतिहास में बोध पर्व के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह वही चिंगारी थी जो बालक मूलशंकर के हृदय में पैदा हुई थी और दयानन्द बनने के पश्चात जब सच्चे गुरू विरजानन्द की शरण में गए तो इनकी जिज्ञासाएं शान्त हुई। आर्य समाज के प्रधान श्री अश्विनी मोंगा ने आए हुये मेहमानों का स्वागत करते हुये ऋषि बोध उत्सव की महत्ता का वर्णन करते हुये बताया कि स्वामी दयानन्द जी को महाशिवरात्रि के दिन कैसे ज्ञान प्राप्त हुआ और वह सच्चे शिव की तलाश में घर से निकल पड़े। अलग अलग ऋषि मुनियों से मिल कर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया व आर्य समाज की स्थापना कर लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। आज प्रत्येक आर्य समाजी का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह स्वामी जी के दिखलाए रास्ते पर चले।

प्रधान जी ने मुख्य मेहमान श्री राजेन्द्र बांसल जी का स्वागत करते हुये उनका परिचय आए हुये मेहमानों से करवाते हुये बतलाया कि बांसल जी हमेशा से धर्म कर्म के कार्यों में लगे रहते हैं तथा समाज व स्कूल को दान देते रहते हैं। इससे पूर्व आर्य समाज की यज्ञशाला में शास्त्री श्री शशिकांत वेदालंकार जी द्वारा हवन यज्ञ गायत्री महामंत्रों के उच्चारण से सम्पन्न करवाया गया। इस मौके पर महामंत्री श्री सुरेन्द्र गर्ग, कोषाध्यक्ष श्री दविन्द्र बांसल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री गौरी शंकर, संरक्षक श्रीमती ऊषा गोयल, श्री विनोद गर्ग, अशोक गर्ग, जनेश सिंगला, डा. रूपिन्द्र पुरी, डी.पी. रल्हन व आर्य समाज के अन्य सदस्य गण, आर्य माडल स्कूल के प्रिंसीपल विपिन गर्ग व स्टाफ, आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता व स्टाफ उपस्थित रहे। **-सुरेन्द्र गर्ग महामंत्री**

शहीदे-ए-आजम भगत सिंह का ट्रायल देश के नौजवानों के लिए प्रेरणा स्रोत

ले.-प्रो. स्वतन्त्र मुरगई उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान प्रो. स्वतन्त्र मुरगई जी ने 23 मार्च शहीदी दिवस के अवसर पर अमर शहीदों को नमन करते हुए कहा कि किसी भी देश का गौरवमयी इतिहास अपने वाली पीढ़ियों के लिए नई चेतना व सफूर्ति का द्योतक होता है। भारत की आजादी के लम्बे संघर्ष में कई युवकों ने फांसी के फंदों को चूम कर भारत माता को स्वतन्त्र कराया। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने कुलपति कार्यकाल में पाकिस्तान जाने का अवसर मिला। पाकिस्तान सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ न्यायाधीश खलील-उर-रहमान रमदे भारत की संस्कृति और स्वतन्त्रता संग्राम के संघर्ष को याद करके आज भी श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं। उनके पूर्वज नवांशहर के करियाम ग्राम के रहने वाले थे और ससुराल पंजाब केसरी कार्यालय जालन्धर के पास था। जालन्धर में उनकी भेंट हिन्द समाचार ग्रुप के मुख्य संपादक श्री विजय चोपड़ा से भी हुई तथा उन्होंने पुरानी यादों को ताजा किया। जज साहिब ने आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल नवांशहर को अपने पिता जी की याद में 10 लाख की राशि यादगार बनाने के लिए भेंट की थी।

उन्होंने बताया कि जब वह अगस्त 2009 को लाहौर गए तो जज साहिब ने लंच ब्रेक पर उन्हें बताया कि जिस हाईकोर्ट के कमरे में वह खड़े हैं, वहां पर भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव पर मुकद्दमा चला था। 18 अगस्त 2009 को इन दस्तावेजों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने हाईकोर्ट लाहौर को आवेदन किया। सुप्रीमकोर्ट के जज साहिब के प्रयास से 31 अगस्त 2009 को यह ऐतिहासिक ट्रायल उन्हें प्राप्त हुआ। 1659 पृष्ठों का उर्दू में लिखा यह ट्रायल भारत के लिए एक महान् उपलब्धि है। यह सारी कार्रवाई उर्दू भाषा में है। इस ट्रायल से पता चलता है कि अदालती कार्रवाई के दौरान ये क्रान्तिकारी एक बार भी अदालत में पेश नहीं हुए। अंग्रेजी हुकूमत इनसे पूरी तरह से भयभीत थी। भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव सहित 16 लोगों पर 6 मई 1930 को लाहौर कोर्ट में ट्रायल शुरू हुआ और 14 सितम्बर 1930 को इन पर आरोप तय कर दिए गए। आरोपों की सुनवाई 2 न्यायाधीशों के. कोल्डस्ट्रीम व जी.सी. हिल्टन द्वारा हुई। समूचे ट्रायल के दौरान इन तीनों को एक साथ नहीं रखा गया। ट्रायल में दर्ज रिकार्ड के अनुसार जिन बैरकों में वे रहते थे, वे इतने छोटे थे कि उनमें खड़े होना तो दूर पैर तक सीधे करके बैठना भी मुश्किल था। उन्होंने कहा कि इस ट्रायल में ऐसी कई बातें हैं, जिनको पढ़कर हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। सरदार भगत सिंह ने शिक्षा गुरूकुल के स्नातक श्री जयदेव विद्यालंकार से ली थी। इस ट्रायल में कोई भी पन्ना ऐसा नहीं है जिसमें आर्य समाज का जिक्र न हो। उस समय की अंग्रेज हुकूमत आर्य समाज तथा उसके सदस्यों को शक की निगाह से देखती थी तथा आर्य समाज को स्वतन्त्रता संग्राम का केन्द्र बिन्दु समझती थी। आज की युवा पीढ़ी को इनके बलिदान से प्रेरणा लेते हुए इस बहुमूल्य स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिए तथा इन बलिदानियों के बलिदान दिवस पर संकल्प करना चाहिए कि हम अपने देश की उन्नति, विकास, आपसी भाईचारे व संस्कृति को बनाए रखेंगे तथा भारत को तोड़ने वाली शक्तियों का डटकर मुकाबला करेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज सैक्टर-22 चण्डीगढ़ में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। यह कार्यक्रम दिनांक 8 मार्च 2021 सोमवार से प्रारम्भ होकर 14 मार्च 2021 रविवार तक विधिवत् चलता रहा। इस पवित्र अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी वेद वेदांग विद्यापीठ गुरूकुल सुल्तानपुर उत्तर प्रदेश ने वेदोपदेश किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डाला और बोधोत्सव के सही महत्व को बताया। उन्होंने सभी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने पर बल दिया। आर्य जगत् की उच्चकोटि की भजन गायिका अंजलि आर्या ने सुन्दर भजनों की प्रस्तुति दी। दिनांक 14 मार्च रविवार के दिन मुख्य यजमान के आसन पर मेजर विजय आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि आर्या ने यज्ञशाला की शोभा बढ़ाई। यज्ञ के उपरान्त मुख्य यजमान परिवार ने अपने घर में कन्या के जन्म होने के उपलक्ष्य में सचिन और सुप्रिया की पुत्री, मेजर विजय आर्य की पोती पैदा होने 51 हजार रूपये की धनराशि आर्य समाज सैक्टर-22ए. चण्डीगढ को दान दिया। कार्यक्रम प्रातः 7:30 बजे से लेकर दोपहर 2:00 बजे तक विधिवत चला, मुख्य अतिथि के रूप में आर्य समाज राजपुरा के प्रधान श्री विजय आर्य मुनि ने मंच की शोभा बढ़ाई। इस पवित्र अवसर पर केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री रविन्द्र तलवार जी , मन्त्री श्री रघुनाथ आर्य जी तथा केन्द्रीय सभा के समस्त पदाधिकारी गण उपस्थित थे। आर्य समाज सैक्टर-22ए. चण्डीगढ़ के प्रधान श्री कमल कृष्ण भजन, मन्त्री श्री रामेश्वर गुप्ता, प्रचार मन्त्री श्री विजय आर्य तथा आर्य समाज के सभी अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों ने उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में चंडीगढ़, पंचकूला और मोहाली के समस्त डीएवी शिक्षण संस्थाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती तथा स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने मंच की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम के पश्चात आगंतुक सभी विद्वानों का अतिथियों का सम्मान किया गया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

पृष्ठ 2 का शेष-वैदिक पथ प्रशस्ति का पहला कदम...

बालविवाह, सतीप्रथा, शिक्षा सभी के लिए, दलितोद्धार, नारी शिक्षा, वेदों की उच्चता की स्वीकार्यता सभी कार्य उस क्रान्तिकारी सन्यासी देवदयानन्द के प्रयास रहे हैं। धन्य है वह सन्यासी, वह ऋषि जिसने हमें शान एवं गौरव से जीना सिखाया।

आज ऋषिबोधोत्सव पर उस महान विभूति को शत् शत् नमन। उस महान ऋषि द्वारा स्थापित आर्य समाज आज एक वैचारिक क्रान्ति है, जीने की कला है, मानवता का सन्देश है, जीओ और जीने दो की भावना है, मनुष्य से देवता बनने का प्रयास है, प्रेरणा है। आज आर्यसमाज भारत के गौरवमयी इतिहास की झांकी है। बोध दिवस पर हमें उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का संकल्प लेना होगा। अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को बचाने का यही एक उत्तम मार्ग है।

वेदमार्ग ही हमारी संस्कृति है

इड़ा, सरस्वती, मही तिस्त्रो देवीमयो भुवः।। (ऋक् 1/13/1)

का पाठ पढ़ना होगा, इसे कार्यान्वित करना होगा।

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' का सन्देश देकर जनकल्याण की भावना जागृत कर महर्षि दयानन्द सरस्वती को बोध दिवस पर स्मरण कर संकल्प लेना होगा-वेदमार्ग के अनुगामी बनें।

ऋषि बोधोत्सव

आज दिनांक 14.03.2021 (रविवार) को आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में ऋषि बोधोत्सव बड़ी ही श्रद्धा और धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ में श्री ई. आर. कुलदीप राय आहलुवालिया ने सपत्नी यजमान पद को सुशोभित किया। उपस्थित आर्यजनों ने बढ़ चढ़ कर आहुतियां डालीं। तत्पश्चात् दयानंद हाल में कार्यक्रम चला। श्रीमती स्नेह चोपड़ा और कुमारी चेतना भाटिया ने सुन्दर भजन गान किया। मंच का संचालन प्रो. यश वालिया ने किया। प्रो. डा. पी. एन. चोपड़ा ने अपने मुख्य उदबोधन में कहा कि बालक मूलशंकर का महाशिवरात्रि वाली रात का जागरण और बोध आर्य समाज के लिये ऐतिहासिक पर्व है। उन्होंने आगे कहा कि महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती सत्य के लिए जिये और उन्होनें अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में सत्य को ही प्रकाशित किया। स्वामी जी को ईश्वर पर पूर्ण विश्वास था, क्या आस्तिक, क्या नास्तिक सभी ईश्वर के ही आधीन रहते हैं। स्वतन्त्रता के प्रेरणा स्त्रोत, स्त्री शिक्षा और हिन्दी भाषा के पक्षधर स्वामी दयानंद को शत शत नमन। आईये, उनके जीवन से हम सीख लें और अपने जीवन को सार्थक बनायें। शांति पाठ के पश्चात सभी ने मिल बैठ ऋषि प्रसाद का आनंद माना।

अश्विनी शर्मा, प्रधान

गुरुकुल विभाग फिरोजपुर में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर गुरूकुल विभाग फिरोजपुर शहर में ऋषि दयानन्द बोध उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यजमान के रूप में श्रीमती एवं श्री कुलदीप मैनी जी विशेष रूप से पधारे। इस अवसर पर वेद मंत्रों के साथ आहुतियां प्रदान की गई। चित्र दो में उपस्थित आर्य जन।

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज मन्दिर गुरूकुल विभाग फिरोजपुर शहर में ऋषि दयानन्द बोध उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें यज्ञ ब्रह्मा श्री आशीष दत्त शास्त्री द्वारा यज्ञ किया गया। यजमान के रूप में श्रीमती एवं श्री कुलदीप मैनी, श्रीमती एवं श्री सुरेश कुमार, श्रीमती एवं श्री प्रवीण मल्होत्रा, श्रीमती एवं श्री मनीष जोशी जी उपस्थित हुए तथा अन्य सभी आर्य प्रेमी बन्धु गण भी इस यज्ञ में आहुति डालकर पुण्य के भागी बनें। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने रात्रि शयन से पूर्व शिव संकल्प सूक्त के छः मन्त्रों का पाठ करना अनिवार्य बताया है। इन छः मन्त्रों का भाव यह है कि मनुष्य का मन चंचल है। जो मन जागते हुए दूर-दूर तक पहुंच जाता है वही मन सोते हुए भी इधर-उधर भ्रमण करता रहता है। उस मन में शुभ विचार पैदा हों। जिस मन के अन्दर अपार शक्ति है, वह मन शुभ संकल्पों वाला हो। इन सभी मन्त्रों के अन्त में एक ही वाक्य आता है-तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। अर्थात् वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो। मनुष्य के मन में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के विचार आते हैं परन्तु जब वह शुभ विचारों को धारण करने का संकल्प लेता है तो उसके बुरे विचार नष्ट होते जाते हैं। इसलिए प्रत्येक आर्यों को शिवरात्रि के पर्व पर अपनी बुराईयों को छोड़ने का संकल्प लेना चाहिए। अपने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, बुरे विचारों का त्याग करके अपने मन में ज्ञान की ज्योति को प्रज्वलित करना चाहिए। शिवरात्रि का भी यही भाव है कि व्यक्ति अपने अन्दर के अन्धकार को दूर करने का संकल्प ले। शिव का अर्थ है कल्याण और रात्रि का अर्थ है रात अर्थात् कल्याण करने वाली रात। सदियों से इसी भावना के साथ पौराणिक जगत में शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है कि शिव का व्रत रखने से कल्याण होगा, जो श्रद्धा के साथ शिव की पूजा करेगा, रात्रि को जागरण करेगा उसे सच्चे शिव के दर्शन होंगे। सच्चे शिव के दर्शन पौराणिक जगत की कल्पना है। आज तक शिवलिंग में न तो किसी को शिव के दर्शन हुए हैं और न ही कभी होंगे। परन्तु यह शिवरात्रि कल्याण करने वाली रात तब सिद्ध हुई जब इस रात्रि को बालक मूलशंकर ने शिव का व्रत रखा और उन्हें मूर्तिपूजा की वास्तविकता का बोध हुआ। यहीं से बालक मूलशंकर के हृदय में सच्चे शिव के दर्शन करने की अभिलाषा जागृत हुई। महर्षि दयानन्द की यही प्रेरणा आर्य जगत के बोध का पर्व बन गया। इस कार्यक्रम में मुख्य तौर पर प्रधान श्री डी.आर. गोयल, आशीष मल्हौत्रा, इन्द्रजीत भाटिया, सर्वहितेषी भाटिया, दीपक सलूजा, श्री विजय आनन्द, मनोज आर्य, महेश चन्द्र आर्य, विनोद मेहता, श्रीमती संतोष भाटिया, रमेश जेसवाल, शान्तिभूषण शर्मा, वेद प्रकाश बजाज, विजय बजाज, अजय चावला, मनमोहन शास्त्री, पंकज मल्होत्रा, महेश आर्य, सतीश शर्मा, अंकुर चावला, सुरेन्द्र वोहरा तथा फिरोजपुर वेलफेयर क्लब के मेंबर एवं बहुत से आर्य जन उपस्थित हुए।

-डी.आर.गोयल
प्रधान आर्य समाज फिरोजपुर शहर

आर्य समाज बठिंडा में ऋषि बोध उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया

आर्य समाज चौक बठिंडा की ओर से ऋषि बोध उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज की तरफ से प्रभात फेरियों का आयोजन किया गया।

आर्य समाज चौक बठिंडा की ओर से ऋषि बोध उत्सव पर हवन यज्ञ का आयोजन प्रधान श्री अश्विनी मोंगा जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर 13 मार्च 2021 दिन शनिवार को प्रातः 6.00 बजे प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जो शहर के विभिन्न स्थानों से होती हुई वापिस आर्य समाज चौंक बठिंडा में सम्पन्न हुई। मुख्य समारोह दिनांक 14 मार्च 2021 रविवार को प्रातः 8.00 बजे से प्रारम्भ हुआ। हवन यज्ञ के पश्चात श्री राजिन्द्र बांसल ठेकेदार ने ध्वजारोहण करके मुख्य समारोह का शुभारम्भ किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री नारायण सिंह जी के प्रवचन एवं श्री अरुण वेदालंकार के मधुर भजन हुये जिसे सभी ने पसन्द किया। ऋषि बोध उत्सव पर प्रकाश डालते हुये मुख्य वक्ता श्री नारायण सिंह जी ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत आने वाले सभी पर्वों को उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं। क्योंकि पर्वों के द्वारा हमें प्रेरणा मिलती है, हमारे जीवन में नव उत्साह एवं आनन्द का संचार होता है। इसलिए हमारे मनुष्य जीवन में पर्वों की विशेष महत्ता है। इसी प्रकार शिवरात्रि का यह पर्व भी हिन्दुओं में विशेष महत्व रखता है। शिवरात्रि का पर्व लोग बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान शिव को प्रसन्न करने के लोग उपवास रखते हैं और रात्रि में शिव के मन्दिर में जागरण करते हैं। ऐसी ही एक

(शेष पृष्ठ 6 पर)

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड़ जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**